दादी जी के तीसरे पुण्य स्मृति दिवस पर बापदादा को भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश

–गुल्जार दादी

(माताओं की भट्ठी में भोग के समय दादी जी कुछ समय के लिए सभा में पधारी, जानकी दादी ने दादी जी को राखी बांधी, मोहिनी बहन ने तिलक दिया, मुन्नी बहन ने दादी जी का मुख मीठा कराया। दादी जी पूरी सभा को मधुर दृष्टि देते, नयन मुलाकात करते, हाथों से सबको वरदान देते, वतन में उड़ गई। गुल्जार दादी के वापस आने पर वतन का दिव्य सन्देश)

आज सबके मन में डबल याद थी। जो जब वतन में पहुंची तो बाबा ने दादी के साथ-साथ हमारी एडवांस पार्टी को भी वतन में बुलाया हुआ था। और वह सब बाबा से बहुत रमत-गमत कर रहे थे, जैसे रूहरिहान हो रही थी। बाबा से पूछ रहे थे, बाबा हमारा पार्ट कब तक है ? बाबा ने कहा अभी आप लोगों का विशेष पार्ट है, क्योंकि मैजॉरटी जो हमारे बड़े पूर्वज गये हैं वह 4 बजे वतन में साधारण रूप में पहुंचते हैं, जो उनका रूप था, उसी रूप में बाबा इन्हों से मन्सा द्वारा चारों ओर सेवा कराते हैं, अनुभव कराते हैं। कईयों का प्रश्न उठता है वह क्या कर रहे हैं ? तो बाबा ने कहा आप लोग तो पुरुषार्थी लाइफ में हैं लेकिन यह लोग मन्सा सेवा के बहुत बहुत अनुभवी हैं क्योंकि यह आप सेवाधारी ग्रुप के साथी हैं, तो सेवा के बिना यह भी नहीं रह सकते। तो बाबा इस एडवांस पार्टी से मन्सा सेवा द्वारा प्रैक्टिकल कार्य करा रहे हैं। आप अभ्यास कर रहे हो, यह अभ्यासी हैं क्योंकि इनका कोई कर्मबन्धन का जन्म नहीं हुआ है। सेवा के बंधन से इन्हों का जन्म है। जो विशेष पूर्वज गये हैं वह भविष्य की सेवा और अभी की मन्सा सेवा इन दोनों सेवा के लिए इन्हों का जन्म हुआ है। फिर हमने जो दीदी, विश्वकिशोर, जगदीश भाई आदि थे, उनसे हमने कहा आपको संगमयुग याद आता है ? तो कहा हाँ हम तो सारा समय संगमयुग में ही रहते हैं क्योंकि हमारे नस नस में सेवा का संस्कार साकार में भी था, अभी भी है। फिर दादी से मैंने बात की। मैंने कहा दादी इतना टाइम हुआ है, आप जहाँ गई हैं वहाँ अभी क्या फर्क है। तो कहा अभी हमारे जो सम्बन्धी हैं ना, उन्हों को थोड़ा-थोड़ा बाबा ने टच किया है तो वह हमको जानने लगे हैं कि यह हमारे पास कैसे आये, उनको अभी क्वेश्चन उठा है कि यह हैं कौन! 4 बजे हम वतन में चले जाते हैं यह तो उन्हें पता नहीं पड़ता है, वह सोये होते हैं लेकिन अभी थोड़ा-थोड़ा यह जानने लगे हैं कि यह अजीब आत्मायें हैं, कोई विशेष आत्मायें हैं, साधारण नहीं हैं, जो हमारे पास आये हैं। तो जो विशेष सेवाधारी संगमयुग के कनेक्शन से गये हैं, सेवा का जन्म लिया है। तो उनके माँ बाप अभी जानने लगे हैं कि यह अलौकिक हैं, यह साधारण नहीं हैं, न्यारे हैं। आंखों से जैसे लाइट की किरणें निकलती हैं, यह अभी उन्हों को अनुभव होने लगा है। तो बाबा ने कहा धीरे धीरे यह प्रत्यक्षता होगी कि यह लोग जो जन्म लिया है, वह कोई कार्य के लिए लिया है और इन्हों के जो बोल हैं, वह बोल साधारण बच्चों जैसा नहीं है, वह भी न्यारा है।

तो बाबा ने कहा अभी जो सर्विसएबुल बच्चे गये हैं, उन्हों की प्रत्यक्षता यह नहीं हुई है कि यह कोई ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियों ने जन्म लिया है, लेकिन यह समझ रहे हैं कि यह साधारण नहीं हैं। उनमें बच्चे की भासना नहीं आती है जैसे सेंट आत्मायें हमारे घर में आई हैं, ऐसा अनुभव अभी सम्बन्धियों को होने

लगा है। तो हमने कहा बाबा इन्हों का अभी मिलना तो होता नहीं होगा। तो बाबा ने कहा कि जहाँ इन्हों का संबंध हुआ है वहाँ दूर का संबंध है, जैसे दूर के संबंधी कोई कोई मोके पर इकट्ठे होते हैं, ऐसे इनके संबंधी भी कभी-कभी कोई फंक्शन में या कोई कार्य अर्थ इकट्ठे होते हैं। लेकिन पहचान से नहीं होते, लेकिन आगे चलकर धीरे धीरे इन्हों को फील होगा कि हम कोई बहुत नजदीक के हैं। तो बाबा ने कहा कि वह एडवांस पार्टी है और आप एडवांस स्टेज वाले हो। जितना आप अपने को प्रत्यक्ष करेंगे, अभी सिर्फ कहते हैं इन्हों का कार्य अच्छा है लेकिन यही कल्याणकारी, विश्व के आधारमूर्त है, यही विश्व परिवर्तक हैं, इस रूप से नहीं पहचानते हैं। अभी इतना समझते हैं कि ब्रह्माकुमारियां भी कम नहीं हैं, कार्य करने में। अभी यह प्रत्यक्ष हुआ है, लेकिन यह प्रत्यक्ष हो कि इन्हों को सिखाने वाला भगवान है, अभी भगवान तक नहीं पहुंचे हैं। ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छी हैं, पावरफुल हैं ऐसे कहते हैं लेकिन भगवान आया हुआ है, इन्हों को वह पढ़ा रहा है, यह प्रत्यक्षता होगी तब ही समाप्ति होगी। हर एक के मुख में आये कि हमारा बाबा आ गया। अभी समझते हैं ब्रह्माकुमारियों का बाबा है। हमारा बाबा दिल से कहें, वह अभी नहीं हुआ है। तो आप एडवांस स्टेज वाले जो हैं उन्हों को अभी यह कार्य करना है। तो यह बाबा ने बोला और सभी जो इकट्ठे हुए थे उन्होंने भी यही कहा कि हमारी याद जरूर देना।

फिर दादी ने बोला मैं सबसे मिलकर आई। सबकी दिल थी मिले, तो बाबा ने संकल्प दिया कि जब सबकी दिल है तो आपको जाना चाहिए। तो बाबा ने मुझे कहा जैसे आपने सबको दिल से प्यार दिया है, चाहे कोई कैसा भी है लेकिन उनको आपके प्यार का सहारा था, जैसे आप प्यार देने, पालना करने के निमित्त बनी, तो सब याद बहुत करते हैं इसलिए आप भी याद का रेसपान्ड देने के लिए जाओ। तो मैं सबसे मिलकर आई।

बाकी आज वतन में जो श्रंगार था वह बहुत वन्डरफुल था। जो राखियां हम लोगों ने बाबा को भेजी हैं, बहुत करके तो सोने की थी, वतन में तो सब बड़ा-बड़ा दिखाई देता है, तो उन राखियों से ही ऐसे श्रृंगार किया हुआ था। तो बहुत अच्छा न्यारा लग रहा था। फिर दादी निमित्त जो भोग लेकर गई थी वह भी वैरायटी भोग वहाँ इमर्ज था और बाबा ने सभी को अपने हाथों से खिलाया।

बाबा ने फिर लास्ट में कहा कि सभी बच्चों को दो शब्द पक्के कराना – एक एवररेडी, कभी भी क्या भी हो सकता है, यह याद रखो और दूसरा मुझे सम्पन्न सम्पूर्ण अभी होना ही है, होंगे नहीं। होंगे शब्द कट करो, होना ही है। यह दो शब्दों पर सभी अटेन्शन दें और प्रैक्टिकल देखें कि सचमुच हम एवररेडी होने में आगे बढ़ रहे हैं या कोई न कोई बात में अटक पड़ते हैं ? तो बाबा चाहता है अभी ऐसे एवररेडी बनें जो सबको एवररेडी बच्चों का साक्षात्कार हो। जैसे बाबा का सबको साक्षात्कार हुआ, ऐसे अभी आप शक्तियों के झुण्ड का, पाण्डवों के झुण्ड का होना चाहिए। तो जितना आप लोग एवररेडी बनेंगे उतना शक्तियों का मिला हुआ साक्षात्कार होगा। यह बाबा ने लास्ट में कहा और मैं साकार वतन में आ गई। अच्छा - ओम् शान्ति।